संगीत परंपरा में राधा और श्री कृष्ण

डा. ममता सान्याल
एसोसिएट प्रोफेसरए संगीत, गायन
आर्य महिला पी. जी कालेज वाराणसी

Corresponding E-mail: ruchimishra379@gmail.com

विष्णु वैदिक देवता हैं। आभीरों के पुराण से जब श्री कृष्ण आर्यों के पुराण में आये तो विष्णु के साथ एकात्म हो गये। दसवीं शताब्दी के उपरान्त वैष्णव धर्म का विकास हुआ तो कृष्ण और राधा केवल पौराणिक चरित्र ही नहीं वरन् तात्विक प्रतीक बन गए। कृष्ण कथा और कृष्ण काव्य में कृष्ण और राधा को प्रतीकात्मक दृष्टिकोण से ही देखा गया है।

भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में लिखा है कि संसार में जो भी उज्जवल है, पवित्र है, वही श्रृंगार रस है। वही श्रृंगार रस है। वैष्णवों ने समस्त कृष्ण काव्य को 'अन्योक्तिपरक' अर्थात् 'एलिगोरिकल' माना है। साधारण विचार में कृष्ण–राधा पौराणिक चरित्र है किन्तु वैष्णव इन्हें तत्व के रूप में देखते हैं। वैष्णवों के विचार से संसार में जितने प्रकार के प्रेम हैं, माँ बेटे का प्रेम, दो बन्धुओं के बीच का प्रेम, स्वामी–स्त्री का प्रेम, प्रेमी–प्रेमिका के बीच का प्रेम और प्रभु भृत्य का प्रेम, इन सभी प्रकार के प्रेम को यदि एकत्र कर दिया जाए और उसे मनुष्य रूप दिया जाए तो वह होंगे श्री कृष्ण, कृष्ण काले हैं, कृष्ण का रंग एक ऐसा अंधकार है जिसके चारों ओर इन्द्रधनुष हैं, जैसे कि मोरचंद्रिका जिसके केन्द्र में नीला रंग है और यह झिलमिलाते इन्द्रधनुष से घिरी होती है। कृष्ण के रंग में वस्तुतः यही आभा उभरती है और यह आभास देने के लिए ही कृष्ण स्वयं मोर पंख अपने मुकुट पर धारण करते हैं।

कृष्ण का आयुध बाँसुरी है। बाँसुरी मनुष्य के शरीर का प्रतीक है जिस प्रकार बाँसुरी में छेद होते हैं उसी प्रकार मनुष्य के शरीर में भी छः द्वार हैं आँख, नाक इत्यादि। दो भृकुटि के बीच में जो आसाचक्र है वह बाँसुरी के मुखरंध्र में फूँकते हैं तो यह रोगभू शरीर रागभू हो जाता है।

भागवत पुराण में एक ऐसा प्रसंग है कि जब एक शरतपूर्णिमा की रात्रि में कृष्ण बाँसुरी बजाते हैं तो गोपियाँ उसके पास दौड़ी चली आती हैं। कृष्ण गोपियों को उनके कर्तव्य बोध का एहसास कराना चाहते हैं और वापस घर लौट जाने को कहते हैं। गोपियाँ उत्तर देती हैं कि यदि श्री कृष्ण को कर्तव्य ज्ञान ही देना था तो उन्होंने बाँसुरी क्यों बजाई ? बाँसुरी बजाने से उनका शरीर रागभू हो गया, निर्वैयक्तिक हो गया।

यह जिज्ञासा होती है कि कृष्ण माखन क्यों चुराते थे ? क्या उन्हें माखन नहीं मिलता था? इसमें एक गहरा प्रतीक है। भारत में जितने भी पुराण है उसमें दूध को मानव की चेतना का प्रतीक माना गया है इसलिए विष्णु क्षीरसागर पर शयन करते हैं। सागर के मंथन से 'पेन्सिलिन' तथा पोटेशियम साइनाइड दोनों प्राप्त हुआ। यह चेतना सामूहिक चेतना है। एक व्यक्ति की चेतना के मंथन से प्रेम की उत्पत्ति होती है। मक्खन गर्म करने पर वह घी बनता है। मक्खन स्नेह का प्रतीक है और घी मनुष्य की चेतना का प्रतीक है। होम करते समय घी को अग्नि में डालते हैं। अग्नि देवताओं में अग्रणी है। अग्नि पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण को काटकर आकाश की ओर जाती है। यह किसी व्यक्ति की उच्चाकांक्षा की भाँति है । अग्नि का विशेष गुण यह है कि वह कभी धरती नहीं छोड़ती। कृष्ण यह नहीं चाहते थे कि चेतना रूपी संसार के मंथन से जो स्नेह रूपी मक्खन निकला उसका रूप परिवर्तित हो अतः वह मक्खन अर्थात् स्नेह चुराते थे। वह चाहते थे कोई पूजा–पाठ न करे, केवल उनसे प्रेम करे, अपना सर्वस्व उन्हें समर्पित कर दे तो उसका उद्धार हो जायेगा।

गोपियाँ जब दूध और दही बेचने जाती थीं तो श्रीकृष्ण मटकियाँ फोड़ देते थे। प्रतीकार्थ है कि चेतना का विक्रय नहीं होता है। उसे घड़े (शरीर) में ही समाहित रहने दो। उसका व्यवसायीकरण न करो। भागवत में आत्मा और परमात्मा के बीच के संबंध को समझाने के लिए कृष्ण कहते हैं यह शरीर एक घड़े के समान है। उसमें जल जीवन है, आकाश परमात्मा है। घड़े में जल भरने पर उसमें हमें आकाश का प्रतिबिम्ब दिखायी देता है।

राधा और कृष्ण के सम्बन्ध को जानना भी आवश्यक है। राधा प्रेम का प्रतीक है। प्रेम अपनी ओर आकर्षित करता है। अहंकार दूर कर देता है अर्थात् प्रेम एक शक्ति है जो अपनी ओर आकर्षित करती है। शक्ति का रंग स्वर्णिम होता है इसलिए राधा गोरी हैं। कृष्ण राधा के रंग के वस्त्र पीतांबर धारण करते हैं और राधा कृष्ण के रंग के वस्त्र नीलांबरी धारण करती हैं। इसका अभिप्राय यह है कि राधा–कृष्ण पृथक नहीं वरन् एक हैं। वैष्णव राधा और कृष्ण के सम्बन्ध को मधु और मधुरता का सम्बन्ध मानते हैं, दोनों को एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता है।

कृष्ण राधा के दो अलग–अलग रूप हैं– नित्य और लीला रूप। नित्य रूप में दोनों एक हैं और लीला रूप में दोनों एक हैं और लीला रूप में दोनों अलग–अलग हैं। जयदेव की एक अष्टपदी में भगवान श्री कृष्ण राधा को वन में ढूंढते हैं, जबकि वह जानते हैं कि राधा तो उनके भीतर ही हैं। लीला रूप में राधा कृष्ण से पृथक हैं क्योंकि उनमें अहंकार आ जाता है। गीत गोविन्द में राधा कैसे अपने अहंकार को त्याग कर कृष्ण में लीन हो जाते हैं इसका वर्णन मिलता है।

आत्मा और परमात्मा के विषय में कबीरदास जी की एक साखी है "जल में कुंभ, कुंभ में जल है, भीतर बाहर पानी" एक घड़े में समुद्र का जल भरकर समुद्र में रखने से घड़ा सोचता है " भरे हृदय में सागर है और सागर सोच सकता है मेरे हृदय में घड़ा है" ठीक यही सम्बन्ध कृष्ण–राधा का है। सागर श्रीकृष्ण है और राधा घड़ा।

संदर्भ ग्रंथ–अलाउद्दीन खाँ स्मृति व्याख्यान माला, 16 जुलाई 1993, भोपाल